संपादकीय

चंपारण—गाँधी से हांडी तक का सफर : स्मृति, बाज़ार और बदलती पहचान

(प्रथम पृष्ठ से जारी)

तो क्या उसी नाम पर संग्रहालय, सांस्कृतिक केंद्र या अध्ययन संस्थान भी विकसित नहीं किए जा सकते? क्या यह संभव नहीं कि 'चंपारण' नाम का उपयोग करते समय उसके ऐतिहासिक महत्व को भी रेखांकित किया जाए? यहाँ मीडिया और शिक्षा की भूमिका भी महत्वपूर्ण हो जाती है। यदि स्कूलों, कॉलेजों और साहित्यिक मंचों पर चंपारण के इतिहास को जीवंत तरीके से प्रस्तुत किया जाए, तो नई पीढ़ी उससे जुड़ाव महसूस कर सकती है। यदि फिल्मों, नाटकों और साहित्य में इस विषय को बार-बार उठाया जाए, तो यह केवल किताबों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि जनमानस का हिस्सा बन सकेगा।

बाजार को पूरी तरह दोष देना भी एकतरफा दृष्टिकोण होगा। बाजार वही प्रस्तुत करता है, जिसकी मांग होती है। यदि समाज में ऐतिहासिक चेतना की मांग बढ़ेगी, तो बाजार भी उसे अपनाने लगेगा। इसलिए यह जिम्मेदारी केवल व्यापारियों या उद्यमियों की नहीं, बल्कि पूरे समाज की है कि वह अपनी प्राथमिकताओं को संतुलित रखे।

चंपारण का गाँधी से हांडी तक का यह सफर दरअसल एक प्रतीक है–उस बदलाव का, जो हमारे समाज में गहराई से घटित हो रहा है। यह हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि हम अपनी पहचान को किस रूप में देखना चाहते हैं। क्या हम केवल उपभोग करने वाले समाज बनना चाहते हैं, या फिर अपने इतिहास, विचार और मूल्यों को भी साथ लेकर चलना चाहते हैं?

अंततः समाधान किसी एक पक्ष को नकारने में नहीं, बल्कि संतुलन स्थापित करने में है। चंपारण की पहचान में हांडी मटन भी हो सकता है और गाँधी भी। स्वाद और विचार दोनों साथ-साथ चल सकते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने इतिहास को भूलने न दें और उसे वर्तमान के साथ जोड़ने का प्रयास करें।

जब भी 'चंपारण' का नाम लिया जाए, तो उसमें महात्मा गांधी की गूंज भी सुनाई दे । तभी यह नाम अपनी पूरी गरिमा और व्यापकता के साथ जीवित रह सकेगा। यही इस सफर की सबसे बड़ी सीख है कि पहचान केवल बदलती नहीं, उसे सँभालना भी पड़ता है–वरना इतिहास धीरे-धीरे स्मृति से ओझल हो जाता है और केवल बाजार शेष रह जाता है।

सर्वस्टूडेंट हिताय सर्वस्टूडेंट सुखाय

व्यंग्य

प्रतियोगी , गैर प्रतियोगी बोले तो नर्सरी से लेकर बड़ी बड़ी राष्ट्रीय परीक्षाओं में बेखौफ नकल कर मेरिट लिस्ट में आने का सुनहरा सपना देखने वाले अपने प्रिय कॉम्पेटिटरों को सूचित करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि हर तरह की परीक्षाओं में नकल करने करवाने की बढ़ती उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए सर्वस्टूडेंट हिताय सर्वस्टूडेंट सुखाय की तर्ज पर नकल कोचिंग इंस्टीट्यूट का शुभारंभ ठीक डीसी ऑफिस के सामने माननीय मंत्री जी के कर कमलों द्वारा लोकार्पित होने के बाद हो गया है। अब हमारे इंस्टीट्यूट में ऑन लाइन, ऑफ लाइन नकल करने के गुर सीखने वाले नकल करने में कमजोर विद्यार्थी अपना पंजीकरण करवा सकते हैं। हमारा पोर्टल और कार्यालय साल में तीन सौ पैंसठ दिन नकल करने के आधुनिक तौर तरीके सीखने वाले होनहारों की सेवा में खुला रहेगा। हे हमारे देश के हर किस्म के प्रिय नकलचियो! असल में हम बड़े सालों से महसूस कर रहे थे कि आज की परीक्षाएं जितनी बेहतर शून्य श्रम से नकल कर क्रैक की जा सकती हैं उतनी अक्ल से नहीं। आज कदम कदम पर नकल अक्ल पर भारी है। आज हर परीक्षा मेहनत की नहीं, गधे की सवारी है। हे हमारे देश के भविष्य के कर्णधारो! हमें बहुत दुःख होता था जब हम किसी हैंडलर द्वारा किसी होनहार से ठगी की खबर अखबारों में पढ़ते थे। होनहारों से होती इस ठगी को देखते हुए हमने तय कर लिया था कि चाहे जो भी हो, जैसे भी हो, हम होनहारों को भविष्य में निर्मम हैंडलरों के कर कमलों द्वारा ठगने नहीं देंगे। आज हमारी उसी पॉजिटिव सोच का परिणाम है कि हमने विश्व का पहला विश्वस्तरीय नकल कोचिंग इंस्टीट्यूट हर तरह की परीक्षाओं में बैठने वाले प्रतिभागियों को पूरी तरह समर्पित किया है जो नकल करवाने के लेटेस्ट तरीकों पर फोकस होगा। नकल के माध्यम से हर परीक्षा को शत प्रतिशत क्रैक करने की गारंटी देगा। हे नकल कर हर परीक्षा को क्रैक करने का सपना देखने वाले जीनियसो! गली गली में परीक्षाएं क्रैक करवाने का दावा करने वाले कोचिंग सेंटर तो बहुत हैं, पर नकल की सफल कोचिंग दे परीक्षा क्रैक करवाने वाला कहीं एक भी अकेला इंस्टीट्यूट नहीं। अपने स्टेक होल्डर्स की इसी कमी को दूर करने के नेक इरादे से हम नकल कोचिंग इंस्टीट्यूट के माध्यम से नकल की शिक्षा देने का दम रखते हैं। हे मेरे देश के कॉम्पेटिटरो! आज का दौर मेहनत कर कॉम्पीट करने का दौर नहीं, नकल करके कॉम्पीट करने का दौर है। वैसे भी आज जब हमारे पास मेहनत से सफल होने से अधिक विकल्प नकल से सफल होने के हों तो ऐसे में मेहनत कर अपना दिमाग और समय क्यों खराब किया जाए? हमारा दिमाग खराब करने को अपने समाज में और भी बहुत कुछ है। नालायक से लेकर समझदार कॉम्पेटिटर तक सब जानते हैं कि आज की परीक्षाएं अक्ल से नहीं , नकल से क्रैक की जाती हैं। किसी भी परीक्षा में पास होने का अब कोई मतलब नहीं रह गया है। परीक्षा क्रैक हो तो बात बने। आज की तारीख में पास हुओं को कोई नहीं पूछता। सच कहो तो पास तो बिन पेपर दिए भी हुआ जा सकता है। हमारे इस नकल कोचिंग इंस्टीट्यूट में हर तरह की परीक्षाओं में नकल के दम पर परीक्षाओं में बैठने वाले होनहारों को ऑन लाइन, ऑफ लाइन नकल करवाने के ऐसे ऐसे अत्याधुनिक तरीकों का प्रयोग करना सिखाया जाएगा कि सच्ची को नकल पकड़ने वाले भी अपने दांतों तले अपनी उंगलियां दबाने को विवश हो जाएंगे। हे हमारे नव स्टेक होल्डरो! कोई परीक्षाओं में नकल क्यों करता है? पकड़ने जाने के लिए? जी नहीं! परीक्षा में टॉप करने के लिए? जी हां! परीक्षाओं में पास तो सभी हो जाते हैं। पास होने वाले को आज कोई नहीं पूछता। टॉप आने वाले को ही पूजता है। ऐसे में हम अपने स्टेक होल्डरों को विश्वास दिलाते हैं कि हमारे इंस्टीट्यूट से नकल करने के तरीकों का प्रशिक्षण लेने के बाद हमारे नकल कोचिंग इंस्टीट्यूट से पास आउट मेधावी कहीं भी नकल करते नहीं पकड़े जाएंगे। हम इस बात की गारंटी देते हैं। हम नकल करने के डिवाइसों का इस तरह इस्तेमाल करना सिखाएंगे कि किसी भी तरह के जैमर उन्हें जाम नहीं कर पाएंगे। वे हमारे नकल डिवाइसों के आगे खुद जाम हो जाएंगे। अपने को रिजल्ट ओरिएंटिड बनाने के लिए लिए हमने अपनी नकल कोचिंग इंस्टीट्यूट में देश के ही नहीं, अपितु देश से बाहर के भी परीक्षाओं में नकल करवाने पर शोध करने वालों को उनकी सेवाएं देने को राजी कर लिया है। तो आइए, नक्कालों के इस घोर युग में नक्कालों को धत्ता बताते कंधे से कंधा मिलाकर चलें और हर तरह की परीक्षाओं में सफल नकल का इतिहास पर इतिहास बनाएं। हमारा लक्ष्य है कि आज से हर क्रैकबेन हर परीक्षा क्रैक करे।

अशोक गौतम
गौतम निवास, अप्पर सेरी रोड्,
नजदीक मेन वाटर टैंक, सोलन-173212 हि.प्र.

इंदौर समाचार की साढ़े आठ दशक की स्वर्णिम यात्रा, विश्वास, निष्पक्षता और जनसेवा का अद्भुत संगम

85 वर्षों की गौरवशाली यात्रा पूर्ण, 86वें वर्ष में प्रवेश

पत्रकारिता का अडिग स्तंभ : दैनिक इंदौर समाचार

मध्यप्रदेश की पत्रकारिता में अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित करने वाला दैनिक इंदौर समाचार आज साढ़े आठ दशकों की ऐतिहासिक, प्रेरणादायी और गौरवपूर्ण यात्रा पूर्ण कर 86वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। यह केवल एक समाचार पत्र नहीं, बल्कि जनमानस की आवाज़, समाज का आईना और सत्य की सतत खोज का प्रतीक है। 85 वर्षों से निरंतर प्रकाशित होते हुए इस पत्र ने समाज, संस्कृति, राजनीति और जनजीवन के हर पहलू को निर्भीक, निष्पक्ष और तथ्यपरक दृष्टिकोण के साथ पाठकों तक पहुँचाया है। पाठकों के अटूट विश्वास और स्नेह ने इसे मध्यप्रदेश के प्रतिष्ठित समाचार पत्रों में एक विशिष्ट स्थान दिलाया है।

स्थापना का संकल्प : समाज को जागरूक और सशक्त बनाना

दैनिक इंदौर समाचार की स्थापना इंदौर के 'सफेद शेर' के नाम से विख्यात स्व. श्री सुरेश सेठ जी द्वारा उस कालखंड में की गई, जब देश स्वतंत्रता संग्राम की चेतना से ओतप्रोत था। उस समय पत्रकारिता केवल खबरों का माध्यम नहीं, बल्कि जनजागरण और सामाजिक परिवर्तन का सशक्त उपकरण थी। सीमित संसाधनों के बावजूद उच्च आदर्शों और सिद्धांतों के साथ शुरू हुआ यह प्रकाशन कभी अपने मूल्यों से विचलित नहीं हुआ। सत्य और समाजहित इसकी नींव रहे, जिन्होंने इसे निरंतर ऊंचाइयों तक पहुँचाया।

स्वतंत्रता संग्राम में सशक्त योगदान

स्वतंत्रता आंदोलन के दौर में दैनिक इंदौर समाचार ने जनजागरण की मशाल को प्रज्वलित रखा। इसने स्वतंत्रता सेनानियों के संघर्ष, देशभक्ति की भावना और अंग्रेजी शासन के विरुद्ध उठती आवाज़ों को प्रमुखता से स्थान दिया। कठिन परिस्थितियों, प्रशासनिक दबावों और चुनौतियों के बावजूद इस पत्र के संपादकों और पत्रकारों ने निर्भीकता और सत्यनिष्ठा का परिचय देते हुए पत्रकारिता के मूल धर्म को निभाया।

समाज के हर वर्ग की सशक्त आवाज़

दैनिक इंदौर समाचार ने सदैव समाज के हर वर्ग की आवाज़ को मंच प्रदान किया। ग्रामीण अंचलों की समस्याएं, किसानों की पीड़ा, शिक्षा और स्वास्थ्य के मुद्दे, व्यापारिक गतिविधियां, सांस्कृतिक परंपराएं और जनहित के विषय–सभी को इस पत्र ने समान संवेदनशीलता और गंभीरता के साथ प्रस्तुत किया। इसी जनसरोकार ने इसे पाठकों के बीच केवल एक अखबार नहीं, बल्कि विश्वास और सहभागिता का माध्यम बना दिया।

समय के साथ आधुनिकता की ओर अग्रसर

बदलते समय के साथ दैनिक इंदौर समाचार ने स्वयं को निरंतर आधुनिक बनाया। नई प्रिंटिंग तकनीक, आकर्षक लेआउट, बेहतर संपादकीय प्रस्तुति और डिजिटल प्लेटफॉर्म की ओर सशक्त कदम–इन सबने इसे नई पीढ़ी के पाठकों तक भी प्रभावी रूप से पहुँचाया है। आज यह समाचार पत्र प्रिंट के साथ-साथ डिजिटल माध्यमों में भी सक्रिय रहकर आधुनिक पत्रकारिता का सशक्त उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है।

निष्पक्षता ही पहचान

इस समाचार पत्र की सबसे बड़ी ताकत उसकी निष्पक्ष, निर्भीक और तथ्यपरक पत्रकारिता है। हर मुद्दे को बिना किसी पक्षपात के प्रस्तुत करना और जनहित को सर्वोपरि रखना इसकी संपादकीय नीति का मूल आधार रहा है। यही कारण है कि वर्षों से पाठकों का भरोसा इस पत्र के साथ अटूट बना हुआ है।

परंपरा से भविष्य की ओर

86वें वर्ष में प्रवेश केवल एक उपलब्धि नहीं, बल्कि एक नए संकल्प की शुरुआत है। यह संकल्प है–पत्रकारिता की उस गरिमा, जिम्मेदारी और मूल्यों को बनाए रखने का, जो समाज को जागरूक, संगठित और सशक्त बनाते हैं। नई पीढ़ी के पत्रकारों के लिए दैनिक इंदौर समाचार एक प्रेरणास्रोत है कि पत्रकारिता केवल पेशा नहीं, बल्कि समाज के प्रति समर्पण और सेवा का माध्यम है।

इस यात्रा के सच्चे निर्माता

दैनिक इंदौर समाचार की इस गौरवशाली यात्रा को आकार देने में दूसरी पीढ़ी में श्री विवेक सेठ जी एवं तीसरी पीढ़ी में श्री राजेश्वर सेठ जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसके साथ ही परिवार के सदस्यों, समर्पित स्टाफ, मेहनती संवाददाताओं, एजेंट्स और उन सभी सहयोगियों का योगदान अमूल्य है, जिन्होंने इस समाचार पत्र को निरंतर प्रकाशन और प्रगति की दिशा में अग्रसर बनाए रखा।

विश्वास की यह परंपरा यूं ही चलती रहे

85 वर्षों की इस ऐतिहासिक यात्रा ने यह सिद्ध कर दिया है कि सच्ची और ईमानदार पत्रकारिता समाज को दिशा देने की शक्ति रखती है। 86वें वर्ष में प्रवेश के इस शुभ अवसर पर यही कामना है कि दैनिक इंदौर समाचार सत्य, निष्पक्षता और जनसेवा की अपनी गौरवशाली परंपरा को आने वाले वर्षों में भी इसी दृढ़ता और ऊर्जा के साथ आगे बढ़ाता रहे।

प्रमुख विशेषताएं

85 वर्षों की निरंतर प्रकाशन यात्रा
मध्यप्रदेश की प्रतिष्ठित पत्रकारिता परंपरा

निष्पक्ष और जनहितकारी पत्रकारिता की पहचान

समाज के हर वर्ग की सशक्त आवाज़
प्रिंट के साथ डिजिटल माध्यमों में भी सक्रिय उपस्थिति समस्त परिवार, स्टाफ, संवाददाताओं, एजेंट्स एवं पाठकों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

राधेश्याम सोनी वरिष्ठ पत्रकार
मोहन बड़ोदिया

कैसे तेल के लिए अमेरिका ने ईरान की लोकतंत्र को पीछे धकेल दिया?

अमेरिका ने 1953 में जो कारनामे किए, वे कोई काल्पनिक कहानी नहीं हैं। लगभग 60 साल बाद जब गोपनीय दस्तावेज सार्वजनिक हुए, तो 2013 में खुद सीआईए ने लिखित रूप में अपनी भूमिका स्वीकार की। ईरान के मिनाब क्षेत्र में अमेरिकी टामहाक मिसाइल गिरने से 185 के करीब छात्राओं की दर्दनाक मौत हुई, यह किसी भी संवेदनशील व्यक्ति को स्वीकार्य नहीं हो सकता। चाहे हमास गाजा में ऐसा करे या जवाब में इजरायल, निर्दोषों की मौत हर हाल में अन्याय है। ऐसे अन्याय भविष्य में और हिंसा को जन्म देते हैं। भारतीय परंपरा में भी 'धर्मयुद्ध' का सिद्धांत तभी लागू होता है, जब शांति के सारे प्रयास विफल हो जाएं अन्यथा वह हिंसा ही है, संघर्ष नहीं। शुरुआत में अमेरिकी नेतृत्व ने इस हमले से इनकार किया, बल्कि उल्टा ईरान पर ही आरोप लगाया। लेकिन दि न्यूयॉर्क टाइम्स जैसे स्वतंत्र मीडिया ने सच्चाई उजागर की कि मिसाइल अमेरिकी थी। सबूत इतने मजबूत थे कि अंततः पेंटागन को अपनी गलती स्वीकार करनी पड़ी। यही लोकतंत्र की ताकत है, सरकार से ऊपर सत्य की खोज। ईरान में लोकतंत्र बनाम वास्तविकता आज ईरान में इस्लामिक क्रांति के बाद शिक्षा, खासकर महिलाओं की शिक्षा में जबरदस्त प्रगति हुई, 1976 में 35% से बढ़कर 2022 में लगभग 99 प्रतिशत साक्षरता। लेकिन शिक्षा के साथ स्वतंत्रता नहीं आई। इसलिए आज ईरान में सबसे बड़ा विरोध महिलाओं की ओर से ही है।

लोकतंत्र की पहली शर्त है व्यक्ति की स्वतंत्रता: सोचने, बोलने और जीवन जीने की। कानून होने के बावजूद यदि समाज या राजनीति उसे लागू न करे, तो

लोकतंत्र सिर्फ कागजी रह जाता है। लेकिन बड़ा सवालः क्या अमेरिका, जो ईरान में लोकतंत्र लाने की बात करता है, वही उसे खत्म करने का कारण भी रहा है?

1953: ईरान का निर्णायक मोड़

ईरान में एक समय संवैधानिक राजतंत्र था, जहाँ शासक (शाह) के साथ चुनी हुई सरकार भी थी। 1952 में मोहम्मद मोसादेग प्रधानमंत्री बने। मोसादेग प्रगतिशील नेता थे। उन्होंने असली सुधार शुरू किए, मजदूरों के अधिकार, सामाजिक सुरक्षा, बेरोज़गारी भत्ता आदि। लेकिन सबसे बड़ा कदम थाः ईरान के तेल का राष्ट्रीयकरण : उस समय ईरान का तेल एंग्लो-इरानियन ऑयल कंपनी (आज का बीपी) के नियंत्रण में था। ब्रिटेन इस तेल से भारी मुनाफा कमा रहा था।

मोसादेग ने कहा कि ईरान के संसाधनों का लाभ ईरान की जनता को मिलना चाहिए।

ब्रिटेन और अमेरिका की प्रतिक्रिया

ब्रिटेन को यह फैसला असहनीय लगा। लेकिन अकेले वह कुछ नहीं कर सकता था, इसलिए उसने अमेरिका की मदद ली। अमेरिका को डर था कि कहीं मोसद्देग समाजवादी न बन जाएं और सोवियत संघ के करीब न चले जाए। तब सीआईए और ब्रिटिश एमI6 ने मिलकर आपरेशन एजैक्स चलाया।

कैसे गिराई गई सरकार?

सीधे युद्ध नहीं किया गया। बल्कि चालाक रणनीति अपनाई गईः पैसे देकर लोगों से मोसद्देग के समर्थन में रैलियां करवाई गईं। उन्हीं रैलियों में एजेंट घुसाकर हिंसा करवाई गईजनता में यह छवि बनाई गई कि सरकार अराजकता फैला रही है। देश में अस्थिरता बढ़ी, व्यापार प्रभावित हुआ। अंततः सेना को हस्तक्षेप का बहाना मिला। 1953 में सेना ने तख्तापलट कर दिया। मोसद्देग को हटा दिया गया। शाह मोहम्मद रेजा पहलवी को पूर्ण सत्ता दे दी गई। परिणामस्वरूप लोकतंत्र खत्म हो गया। अमेरिका-समर्थित राजशाही स्थापित हो गई। तेल पर फिर से पश्चिम का नियंत्रण हो गया। मोसद्देग को मारने की बजाय नजरबंद कर दिया गया। वे 1967 तक घर में कैद रहे और वहीं उनका निधन हुआ। शाह का शासन आधुनिक था, लेकिन लोकतांत्रिक नहीं। दमन बढ़ा, असंतोष बढ़ा और अंततः 1979 में हुआ ईरानियन रेवोल्यूशन, जिसने इस्लामिक शासन स्थापित कर दिया।

ईरान की कहानी यह दिखाती है कि संसाधनों (खासकर तेल) की राजनीति कितनी गहरी होती है बाहरी ताकतें लोकतंत्र के नाम पर अपने हित साध सकती हैं और एक गलत हस्तक्षेप दशकों तक किसी देश की दिशा बदल सकता है।

स्नेहा सिंह
जेड-436ए, सेक्टर-12,
नोएडा-201301 (उ.प्र.)
मो- 8368681336

भगवान से पहले क्या था? सनातन दृष्टि में सृष्टि का आदि रहस्य

प्रस्तावनाः जिज्ञासा से आत्मबोध तक

जब मानव मन सृष्टि के रहस्य को समझने का प्रयास करता है, तब वह अनिवार्य रूप से इस प्रश्न तक पहुँचता है– 'भगवान से पहले क्या था?' यह प्रश्न केवल बौद्धिक जिज्ञासा नहीं, बल्कि आत्मा की उस गहरी पुकार है, जो अपने मूल को जानना चाहती है। सनातन धर्म इस प्रश्न का उत्तर किसी तर्क या कल्पना से नहीं, बल्कि अनुभूति, ध्यान और शास्त्रीय प्रमाणों के माध्यम से देता है।

सृष्टि से पहले की स्थितिः वेदों का दिव्य उद्घोष

ऋग्वेद के नासदीय सूक्त में सृष्टि के प्रारंभ से पहले की स्थिति का अत्यंत गूढ़ और अद्भुत वर्णन मिलता है–

'नासदासीन्नो सदासीत्तदानीं
नासीद्रजो नो व्योमा परो यत्।'

अर्थात उस समय न तो सत् था, न असत्; न आकाश था, न अंतरिक्ष। यह एक ऐसी अवस्था थी जहाँ न कोई नाम था, न रूप, न दिशा, न काल। यह पूर्णतः अव्यक्त और अगम्य स्थिति थी।

यहाँ 'कुछ नहीं था' का अर्थ शून्यता नहीं, बल्कि उस अवस्था का संकेत है जो हमारी इंद्रियों और बुद्धि की पकड़ से परे है। यह वही स्थिति है जिसे ऋषियों ने 'अव्यक्त' कहा।

उपनिषदों का प्रकाशः केवल ब्रह्म का अस्तित्व

उपनिषद इस रहस्य को और स्पष्ट करते हैं। छांदोग्य उपनिषद कहता है–

'सदेव सोम्य इदमग्र आसीत्'

अर्थात हे प्रिय, इस सृष्टि के प्रारंभ में केवल 'सत्' अर्थात् ब्रह्म ही था।

बृहदारण्यक उपनिषद में यह भाव और भी स्पष्ट हो जाता है–

'अहमेवासमेवाग्रे नान्यत्किञ्चन मिषत्।'

अर्थात प्रारंभ में केवल मैं ही था, मेरे अतिरिक्त कुछ भी नहीं था। यह 'मैं' कोई व्यक्तित्व नहीं, बल्कि शुद्ध चेतना है–वह परम सत्ता जिसे ब्रह्म कहा गया है। वही अनादि है, वही अनंत है, और वही सृष्टि का मूल है।

पुराणों की दृष्टिः अव्यक्त से व्यक्त की यात्रा

पुराणों में इस रहस्य को प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है। श्रीमद्भागवत महापुराण में वर्णन आता है–

'अहमेवासमेवाग्रे नान्यद् यत्सदसत्परम्।'

अर्थात सृष्टि के प्रारंभ में केवल मैं ही था, न सत् था न असत। इस स्थिति को 'कारण जल' के रूप में भी वर्णित किया गया है, जहाँ चारों ओर अंधकार था और केवल नारायण योगनिद्रा में स्थित थे। उनके नाभि से कमल प्रकट हुआ और उस कमल से ब्रह्मा जी उत्पन्न हुए, जिन्होंने सृष्टि की रचना की। यह कथा केवल घटना नहीं, बल्कि एक गहरा संकेत है–कि सृष्टि का प्रकट रूप (ब्रह्मा) उस चेतना (विष्णु/नारायण) से उत्पन्न होता है, जो स्वयं उस परम ब्रह्म की अभिव्यक्ति है।

ब्रह्मः जो कभी बना ही नहीं

अब प्रश्न का मूल उत्तर यहीं निहित है। यदि हम पूछते हैं कि 'भगवान को किसने बनाया?', तो यह प्रश्न तभी तक सार्थक है जब तक हम भगवान को एक व्यक्ति या रूप में देखते हैं।

लेकिन उपनिषद कहते हैं–

'न जायते म्रियते वा कदाचित्'
(कठोपनिषद्)

अर्थात वह न जन्म लेता है, न मरता है।

यहाँ स्पष्ट है कि ब्रह्म कोई उत्पन्न वस्तु नहीं है। वह स्वयंभू है, अनादि है, और उसी से सब कुछ उत्पन्न होता है।

काल का रहस्यः ब्रह्मांड की आयु

सनातन शास्त्र केवल दर्शन ही नहीं देते, बल्कि समय की अद्भुत गणना भी प्रस्तुत करते हैं। एक कल्प, जो ब्रह्मा का एक दिन है, 4.32 अरब वर्षों का होता है। उतनी ही अवधि उसकी रात की होती है। इस प्रकार सृष्टि का निर्माण और प्रलय निरंतर चलता रहता है। यह दर्शाता है कि सृष्टि एक बार नहीं बनी, बल्कि यह एक चक्रीय प्रक्रिया है–सृजन, पालन और लय का अनंत क्रम।

आध्यात्मिक निष्कर्षः प्रश्न से परे का उत्तर

जब हम गहराई से विचार करते हैं, तो यह समझ में आता है कि 'भगवान से पहले क्या था' यह प्रश्न स्वयं सीमित दृष्टिकोण से उत्पन्न हुआ है। क्योंकि 'पहले' और 'बाद' का विचार भी समय पर आधारित है, और समय स्वयं सृष्टि का भाग है। जहाँ समय ही नहीं था, वहाँ 'पहले' का प्रश्न भी नहीं उठता। वहाँ केवल ब्रह्म था–शुद्ध चेतना, अनंत अस्तित्व, और परम सत्य।

अंतिम अनुभूति

जब यह ज्ञान केवल विचार नहीं, बल्कि अनुभव बन जाता है, तब व्यक्ति यह समझता है–

'अहं ब्रह्मास्मि'

अर्थात मैं उसी ब्रह्म का अंश हूँ। तब यह प्रश्न समाप्त हो जाता है कि 'भगवान से पहले क्या था', क्योंकि तब यह अनुभव होता है कि वही ब्रह्म हर कण में, हर जीव में, और स्वयं हमारे भीतर विद्यमान है।

अंतिम संदेश

यह विषय केवल जानने का नहीं, बल्कि अनुभव करने का है। जब मन शांत होता है और चेतना भीतर की ओर मुड़ती है, तब यह रहस्य स्वयं प्रकट होता है। यह लेख वेद, उपनिषद, पुराण और गहन साधना के अनुभव पर आधारित है। इसमें प्रस्तुत विचार केवल ज्ञान नहीं, बल्कि आत्मानुभूति की अभिव्यक्ति हैं। यह सम्पूर्ण लेख मैंने अपने अध्ययन, साधना और भारतीय संस्कृति के प्रति समर्पण के साथ लिखा है।

आचार्य डॉ महेंद्र सिंह गोले